

13-स्रष्टा का परम प्रसाद—प्रखर प्रज्ञा

अध्याय 1: चेतना की सत्ता एवं उसका विस्तार

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इस संसार में जड़ के साथ और क्या गुँथा हुआ है?

उत्तर: इस संसार में जड़ के साथ चेतन भी गुँथा हुआ है।

2. प्रश्न: शरीर कब तक सक्रिय रह सकता है?

उत्तर: जड़ शरीर तभी तक सक्रिय रह सकता है, जब तक कि उसके साथ ईश्वरीय चेतना जुड़ी रहती है।

3. प्रश्न: निराकार चेतना की सत्ता कहाँ समाई हुई है?

उत्तर: निराकार चेतना की सत्ता सर्वत्र समाई हुई है।

4. प्रश्न: विराट ब्रह्माण्ड में फैली हुई सत्ता को क्या कहते हैं?

उत्तर: विराट ब्रह्माण्ड में संव्याप्त सत्ता को विराट् ब्रह्म या परमात्मा कहते हैं।

5. प्रश्न: मनुष्य के भीतर परमात्मा का कौन सा अंश काम करता है?

उत्तर: परमात्मा का एक छोटा अंश जीवधारियों के भीतर काम करता है, और मनुष्य में इस अंश का स्तर ऊँचा और अधिक है।

6. प्रश्न: प्रतिभा किसे कहते हैं?

उत्तर: मानवीय अन्तराल में प्रसुप्त पड़ी विभूतियों का सम्मिश्रण जहाँ भी अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत स्वरूप में दिखाई पड़ता है, उसे प्रतिभा कहते हैं।

7. प्रश्न: प्रतिभा का दुरुपयोग करने पर मनुष्य कैसा बन जाता है?

उत्तर: जब मनुष्य अपनी प्रतिभा का दुरुपयोग अनुचित कामों में करने लगता है, तो वह दैत्य बन जाता है और दैत्यों जैसा व्यवहार करता है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: चेतना को साकार होने की अपेक्षा निराकार क्यों रहना पड़ता है?

उत्तर: चेतना यदि साकार होती तो उसे किसी एक स्थान पर, एक नाम-रूप के बन्धन में बँधकर रहना पड़ता, जिससे वह सीमित बनकर रह जाती। निराकार रहकर वह सर्वत्र समाई रह सकती है।

2. प्रश्न: मनुष्य को "ईश्वर का उत्तराधिकारी ज्येष्ठ राजकुमार" कहने में क्या बाधा है?

उत्तर: मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति, वासना, तृष्णा और अहंता के लौहपाशों में जकड़ा होना उसे ईश्वर का उत्तराधिकारी बनने से रोकता है। इन्हीं के कारण वह गर्हित गतिविधियाँ अपनाता है और दुर्गति का भाजन

बनता है।

3. प्रश्न: मनुष्य की सबसे प्रधान भूल क्या है और उसका परिणाम क्या होता है?

उत्तर: मनुष्य की प्रधान भूल है तत्काल कर्मफल की इच्छा रखना और दूरदर्शिता को खो देना। इस भूल के कारण वह अपने जीवन का उद्देश्य, स्वरूप और वरिष्ठता तक भूल जाता है और मार्ग से भटक जाता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "मनुष्य वस्तुतः ईश्वर की सन्तान नहीं वरन् बन्दर की ही अनगढ़ औलाद है," यह व्यंग्य-उपहास क्यों किया जाता है?

उत्तर: यह व्यंग्य-उपहास मनुष्य के अदूरदर्शी और अविवेकी चिन्तन के कारण किया जाता है। जब मनुष्य तात्कालिक लाभ के लिए उतावला हो जाता है और दूरदर्शिता खो देता है, तो उसका व्यवहार एक अनगढ़ प्राणी जैसा हो जाता है। इसी भ्रष्ट चिन्तन से भ्रष्ट आचरण उत्पन्न होता है, जो उसे ईश्वर की संतान की गरिमा से गिरा देता है।

2. प्रश्न: ईश्वर और जीव के अत्यंत निकट होते हुए भी वे एक-दूसरे से अपरिचित क्यों बने हुए हैं? इस अपरिचय के क्या परिणाम होते हैं?

उत्तर: विशालकाय नगरों में एक ही भवन में रहने वाले पड़ोसियों की तरह, मनुष्य अपने अति निकट रहने वाली ईश्वरीय सत्ता से अपरिचित रहता है। इस भुलक्कड़पन और अपरिचय के कारण वह यह मान लेता है कि इस सृष्टि का कोई नियामक नहीं है और वह मनमानी करने के लिए स्वतंत्र है। इसका परिणाम यह होता है कि वह स्वेच्छाचारी और अनाचारी बनकर अपने लिए ही संकट उत्पन्न करता है।

अध्याय 2: अनास्था की जननी—दुर्बुद्धि

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अनास्था को जन्म कौन देती है?

उत्तर: दुर्बुद्धि अनास्था को जन्म देती है।

2. प्रश्न: दुर्बुद्धि ने मनुष्य को कैसा बना दिया है?

उत्तर: दुर्बुद्धि ने मनुष्य को मर्यादाओं, प्रतिबन्धों और वर्जनाओं को तोड़ने के लिये उद्धत स्वभाव वाला वनमानुष बनाकर रख दिया है।

3. प्रश्न: मनुष्य की दो प्रमुख भूलें कौन सी हैं?

उत्तर: मनुष्य की दो प्रमुख भूलें हैं: पहली, स्वेच्छाचारी बनकर अपने मार्ग में कांटे बोना और दूसरी, अपने स्वरूप, कर्तव्य और उद्देश्य को भूल जाना।

4. प्रश्न: छोटे बच्चे भी किस बात की महत्ता को समझते हैं?

उत्तर: छोटे बच्चे भी अपने से बड़ी शक्ति के साथ सम्बन्ध जोड़ने की महत्ता को समझते हैं और उसी की ओर आकर्षित होते हैं जिसके पास उपहार होते हैं।

5. प्रश्न: क्या ईश्वर-सान्निध्य के लिए किये गए प्रयास अन्धविश्वास हैं?

उत्तर: नहीं, ईश्वर-सान्निध्य के लिए किये गए प्रयास अन्धविश्वास नहीं हैं। यदि सही मार्ग पता हो तो इसमें आश्चर्यजनक सफलता मिल सकती है, जैसे चींटी धीरे-धीरे चलकर पर्वत शिखर पर पहुँच जाती है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: ऊँचे तालाब और नीचे गड्ढे के उदाहरण से लेखक क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: इस उदाहरण से लेखक समझाना चाहते हैं कि जैसे ऊँचे तालाब का पानी नाली बनाने पर स्वतः ही नीचे के गड्ढे को भर देता है, उसी प्रकार सर्वशक्तिमान ईश्वर से संबंध जोड़ने पर मनुष्य का स्तर भी ऊँचा उठता है और उसे दैवी सहायता प्राप्त होती है।

2. प्रश्न: सज्जनों और महामानवों की संगति का क्या लाभ होता है?

उत्तर: सज्जनों और महामानवों के सान्निध्य में रहने वाले लोग उनकी विशेषताओं को अपना लेते हैं। जैसे चन्दन के पास उगे झाड़ भी सुगन्धित हो जाते हैं और पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है, उसी प्रकार सत्संग से व्यक्ति का उत्थान होता है।

3. प्रश्न: लेखक को इस बात पर आश्चर्य क्यों होता है कि मनुष्य भगवान से घनिष्ठता बनाने में उपेक्षा बरतता है?

उत्तर: लेखक को आश्चर्य इसलिए होता है क्योंकि छोटे बच्चे भी बड़ी शक्ति से जुड़ने का महत्व समझते हैं और मनुष्य भी सांसारिक जीवन में सशक्त लोगों का सान्निध्य चाहता है, लेकिन वह सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ जुड़ने में उतने भी प्रयत्न नहीं करता जितने सामान्य स्वजनों के लिए करता है। इसी उपेक्षा के कारण वह अपनी वर्तमान दीन-हीन स्थिति में पड़ा रहता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: दुर्बुद्धि को "अनास्था की जननी" क्यों कहा गया है? यह मनुष्य और समाज को कैसे प्रभावित करती है?

उत्तर: दुर्बुद्धि को "अनास्था की जननी" इसलिए कहा गया है क्योंकि यह मनुष्य को स्वेच्छाचारी और मर्यादाहीन बनाती है, जिससे ईश्वरीय सत्ता और कर्मफल के सिद्धांत में उसका विश्वास समाप्त हो जाता है। यह मनुष्य को अपने स्वरूप और उद्देश्य से भटका देती है। समाज पर इसका प्रभाव यह होता है कि लोग मिल-जुलकर रहने की बजाय स्वार्थ में लिप्त हो जाते हैं, जिससे अभावग्रस्तता, विषमता और विपन्नता फैलती है।

2. प्रश्न: यदि मनुष्य की सोच ठीक होती तो यह संसार कैसा होता? दुर्बुद्धि इस आदर्श स्थिति को कैसे रोकती

है?

उत्तर: यदि मनुष्य की सोच ठीक होती तो सभी लोग मिल-जुलकर रहते, एक-दूसरे को आगे बढ़ाते और सीमित साधनों में भी संतुष्ट रहते। तब यहाँ सुख-शांति का वातावरण होता। दुर्बुद्धि इस आदर्श स्थिति को रोकती है क्योंकि वह मनुष्य को वर्जनाओं को तोड़ने और स्वार्थपूर्ण आचरण करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे समाज में सहयोग की जगह संघर्ष उत्पन्न होता है।

अध्याय 3: ईश्वर सम्बन्धी भ्रान्तियाँ

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: जनसाधारण के मन में ईश्वर के बारे में क्या मूर्खतापूर्ण कल्पना बैठ गई है?

उत्तर: जनसाधारण ने ईश्वर को एक सिद्धान्त-रहित भूत-प्रेत जैसा मान लिया है जो उपहार बटोरता है और छोटी-मोटी पूजा-पाठ से प्रसन्न होकर मनचाहे वरदान बाँटता है।

2. प्रश्न: लोगों की ईश्वर संबंधी मान्यता के अनुसार, पूजा में गलती होने पर ईश्वर क्या करता है?

उत्तर: मान्यता के अनुसार, पूजा में छोटी-मोटी गलती होने पर भी वह आगबबूला हो जाता है और अपने भक्त की जान लेने तक को तैयार हो जाता है।

3. प्रश्न: तथाकथित देवी-देवताओं के एजेंटों को क्या लाभ होता है?

उत्तर: इन देवी-देवताओं के स्वयंभू एजेंटों की पाँचों उँगलियाँ घी में रहती हैं, क्योंकि वे मनोकामना पूर्ति के बहाने अपना धंधा चलाते रहते हैं।

4. प्रश्न: मनोकामना पूरी न होने पर लोग ईश्वर के साथ कैसा व्यवहार करते हैं?

उत्तर: मनोकामना पूरी न होने पर वही लोग ईश्वर को सौ गुनी गाली देते हैं जो पहले मित्रों और चमचागिरी करते थे।

5. प्रश्न: क्या चाटुकारिता और मनुहार से ईश्वर को प्रसन्न किया जा सकता है?

उत्तर: नहीं, सिद्धान्त-रहित, उपहार और मनुहार का लालची ईश्वर नहीं हो सकता। यदि ऐसा होता तो विवेकशीलता और न्यायनिष्ठा समाप्त हो जाती।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ईश्वर के प्रचलित स्वरूप को "कबायली परमेश्वर" और "कालभैरव" क्यों कहते हैं?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि लोगों ने ईश्वर को एक ऐसे सीमित, स्वार्थी और गुस्सैल देवता के रूप में चित्रित किया है जो अपने कबीले या समूह का ही भला चाहता है, दूसरे देवता की पूजा से नाराज हो जाता है, और छोटी-छोटी बातों पर क्रुद्ध होकर दंड देता है। यह स्वरूप एक आदिम कबीले के देवता जैसा है, न कि सर्वव्यापी, न्यायकर्ता परमात्मा जैसा।

2. प्रश्न: ईश्वर के प्रति भ्रान्त मान्यताओं से समाज में किस तरह का पाखंड फैलता है?

उत्तर: इन भ्रान्त मान्यताओं के कारण समाज में पाखंड फैलता है। स्वयंभू एजेंट मनोकामना पूरी कराने के नाम पर लोगों को ठगते हैं। लोग कर्म और पुरुषार्थ की जगह पूजा-पाठ के छोटे-मोटे क्रिया-कलापों से सब कुछ पाने की उम्मीद करते हैं, जो एक प्रकार का मिथ्या भ्रम-जंजाल है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, ईश्वर के प्रति भ्रान्तियों को तोड़ने से क्या संभावित नकारात्मक प्रतिक्रिया हो सकती है और उसके लिए क्यों तैयार रहना चाहिए?

उत्तर: इन भ्रान्तियों को तोड़ने से तथाकथित पूजा-पाठ करने वालों की मान्यताएँ डाँवाडोल हो सकती हैं और वे पूजा-पाठ में और कमी ला सकते हैं। भक्ति की आड़ में अपना व्यवसाय चलाने वाले लोग अपने धंधे में घाटा देखकर आक्रोशित होकर विरोध भी कर सकते हैं। लेखक के अनुसार, सही अध्यात्म की स्थापना के लिए यह सब सहने के लिए तैयार रहना चाहिए।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "अंधे के हाथों कभी बटेर लग जाए तो बात दूसरी है, पर उससे भ्रान्ति पर आधारित मान्यता की पुष्टि नहीं होती।" इस कथन का ईश्वर-भक्ति के संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि कभी-कभी संयोगवश किसी की मनोकामना पूरी हो सकती है, ठीक वैसे ही जैसे किसी अंधे व्यक्ति को अकस्मात कोई कीमती चीज मिल जाए। लेकिन इस एक संयोग को यह प्रमाण नहीं मान लेना चाहिए कि पूजा-पत्री और मनौतियों वाली भ्रान्त मान्यता सही है। यह सिर्फ एक आकस्मिक घटना है, जो ईश्वर के न्याय और कर्मफल के सिद्धांत को नहीं बदलती।

2. प्रश्न: ईश्वर के प्रति प्रचलित भ्रान्तियाँ मनुष्य के आध्यात्मिक विकास में सबसे बड़ी बाधा क्यों हैं?

उत्तर: ये भ्रान्तियाँ आध्यात्मिक विकास में सबसे बड़ी बाधा हैं क्योंकि वे मनुष्य को आत्म-परिष्कार, पुरुषार्थ और पात्रता अर्जित करने के सही मार्ग से भटका देती हैं। मनुष्य ईश्वर को बाहरी सत्ता मानकर उसे रिश्वत (उपहार) और चापलूसी से प्रसन्न करने की कोशिश करता है, जबकि सच्चा अध्यात्म व्यक्तित्व के परिष्कार और सद्गुणों के विकास पर जोर देता है। इन भ्रान्तियों के कारण व्यक्ति सही मार्ग अपनाए बिना ही फल की आशा करता है और असफल होने पर नास्तिक बन जाता है या भाग्य को दोष देता है।

अध्याय 4: दैवी सत्ता की सुनियोजित विधि-व्यवस्था

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: नकली वस्तुओं की बिक्री अधिक क्यों होती है?

उत्तर: नकली वस्तुएँ सस्ती होती हैं और अधिक चमकीली दिखती हैं, इसलिए उनकी बिक्री अधिक होती है।

2. प्रश्न: लोग देवी-देवताओं से निराश क्यों हो जाते हैं?

उत्तर: लोग मनोकामनाओं का पुलिंदा लेकर देवी-देवताओं के पीछे गिड़गिड़ाते हैं, पर जब समुचित पुरुषार्थ और पात्रता के बिना उनकी इच्छा पूरी नहीं होती तो वे खाली हाथ लौटकर निराश हो जाते हैं।

3. प्रश्न: विश्व के शक्ति-भंडार में सबसे सर्वोपरि बल कौन-सा है?

उत्तर: विश्व के शक्ति-भंडार में सर्वोपरि आत्मबल है, जिसकी तुलना धनबल, शस्त्रबल या सत्ताबल से नहीं हो सकती।

4. प्रश्न: असुरों द्वारा प्राप्त की गई सिद्धियों का अंत में क्या परिणाम हुआ?

उत्तर: असुरों (जैसे भस्मासुर, रावण) द्वारा प्राप्त सिद्धियाँ अंत में उनके और उनके सम्बन्धियों के लिए विनाश और विपत्ति का कारण बनीं।

5. प्रश्न: महामानवों (जैसे बुद्ध, गाँधी) की साधनाओं का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर: उनकी साधनाओं ने जहाँ उन्हें मनस्वी बनाया, वहीं उनके कार्यों ने समाज का असाधारण हित भी किया।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने अध्यात्म के नकलीपन की तुलना किन चीजों से की है और क्यों?

उत्तर: लेखक ने अध्यात्म के नकलीपन की तुलना नकली सोने-चाँदी, हीरे-मोती, घी और शहद से की है। ऐसा इसलिए क्योंकि जैसे ये नकली वस्तुएँ दिखने में आकर्षक पर मूल्यहीन होती हैं, वैसे ही बिना पुरुषार्थ और पात्रता के केवल पूजा-पाठ की "टण्ट-घण्ट" वाला अध्यात्म भी दिखावटी और फलहीन होता है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, मानवीय पुरुषार्थ के साथ दैवी शक्ति का समावेश क्यों आवश्यक है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, केवल मानवीय पुरुषार्थ से बड़े लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकते, क्योंकि मनुष्य की अपनी भूलें, कमजोरियाँ और प्रतिकूल परिस्थितियाँ सफलता में बाधक बन सकती हैं। जैसे पीछे की हवा वाहन को गति देती है, वैसे ही दैवी शक्ति का सहयोग बड़े और कठिन कार्यों को संभव बनाता है।

3. प्रश्न: "आए दिन लाभ मिलते रहने की बात न बनते देखकर उस प्रक्रिया को छोड़ बैठते हैं या जब-तब अनमने मन से लकीर पीट लेते हैं।" इस पंक्ति का आशय क्या है?

उत्तर: इस पंक्ति का आशय यह है कि जब लोगों को अपनी पूजा-पाठ से तुरंत और लगातार लाभ नहीं मिलता, तो उनका विश्वास डगमगा जाता है। वे या तो उस पूजा-प्रक्रिया को पूरी तरह छोड़ देते हैं या फिर बिना मन और श्रद्धा के केवल एक रस्म की तरह उसे निभाते रहते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "अच्छा होता अध्यात्म का दर्शन, स्वरूप, उद्देश्य और प्रयोग के सम्बन्ध में गहराई में उतरकर जानने का प्रयत्न किया गया होता।" लेखक ऐसा क्यों कहते हैं? इसका पालन न करने के क्या परिणाम होते हैं?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि लोग अध्यात्म को समझे बिना, उसे केवल मनोकामना पूर्ति का एक शॉर्टकट मान लेते हैं। वे यह नहीं समझते कि सच्चा अध्यात्म आत्मबल और व्यक्तित्व के परिष्कार पर आधारित है। इसका पालन न करने का परिणाम यह होता है कि लोग कम कीमत (थोड़ी पूजा-पत्री) देकर बहुमूल्य वस्तु (सिद्धि या सफलता) पाना चाहते हैं, और जब असफल होते हैं तो वे साधना, देवता या अपने भाग्य को दोष देकर अनास्थावान बन जाते हैं।

2. प्रश्न: असुरों और महामानवों, दोनों ने साधना की, पर उनके परिणामों में इतना अंतर क्यों था?

उत्तर: दोनों के परिणामों में अंतर उनके उद्देश्य और पात्रता के कारण था। असुरों ने साधना से प्राप्त शक्ति का उपयोग स्वार्थ, अहंकार और विनाश के लिए किया, इसलिए उनका अंत भी विनाशकारी हुआ। इसके विपरीत, महामानवों ने अपनी साधना और आत्मबल का उपयोग लोकमंगल और समाज के हित के लिए किया, जिससे उन्हें अक्षय कीर्ति मिली और वे समाज के लिए प्रेरणास्रोत बने। इससे यह सिद्ध होता है कि शक्ति का सदुपयोग ही उसे सार्थक और स्थायी बनाता है।

अध्याय 5: आत्मबल से उभरी परिष्कृत प्रतिभा

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्यात्मबल का सम्पादन कैसे किया जा सकता है?

उत्तर: अध्यात्मबल का सम्पादन आत्मशोधन (अपने व्यक्तित्व को सुधारना) और लोकमंगल (संसार की भलाई) के कार्यों को जीवन का अंग बनाकर किया जा सकता है।

2. प्रश्न: धोबी की भट्टी और लोहे के उदाहरण से लेखक क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: इन उदाहरणों से लेखक समझाते हैं कि जैसे भट्टी में तपने से मैले कपड़े साफ होते हैं और बेकार लोहा फौलाद बन जाता है, वैसे ही आत्मशक्ति की प्रखरता (तप) से व्यक्तित्व निखरता है और महान कार्य करने योग्य बनता है।

3. प्रश्न: चाणक्य ने चन्द्रगुप्त का सकपकाना देखकर उसे क्या कहकर प्रोत्साहित किया?

उत्तर: चाणक्य ने कहा, "अपनी दासी पुत्र वाली मनोदशा से ऊपर उठो और चाणक्य के वरद पुत्र जैसी भूमिका निभाओ। विजय प्राप्त कराने की जिम्मेदारी तुम्हारी नहीं, मेरी है।"

4. प्रश्न: भगवान कृष्ण ने अर्जुन को महाभारत युद्ध के लिए कैसे तैयार किया?

उत्तर: भगवान ने कहा कि कौरवों को तो उन्होंने पहले ही मार दिया है, अर्जुन को तो केवल श्रेय लेने के लिए निमित्त बनना है। यदि वह नहीं लड़ेगा तो श्रेय और गौरव दोनों गँवा बैठेगा।

5. प्रश्न: युगसृजन में वास्तविक शक्ति किसकी होगी और श्रेय किन्हें मिलेगा?

उत्तर: युगसृजन में वास्तविक शक्ति ईश्वरीय सत्ता की होगी, पर श्रेय उन लोगों को मिलेगा जिन्होंने अपनी निजी शक्ति के बजाय ईश्वरीय योजना में सहयोग किया।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: केवट, शबरी, गिलहरी जैसे साधारण पात्र इतिहास में स्मरणीय कैसे बन गए?

उत्तर: उनकी भौतिक सामर्थ्य बहुत कम थी, लेकिन उन्होंने अपने भीतर देवत्व की मात्रा (सेवा, समर्पण, श्रद्धा) को बढ़ा लिया था। इसी आत्मबल और ईश्वर के कार्य में सहयोग करने की भावना ने उन्हें मनस्वी बनाया और इतिहास में स्मरणीय कर दिया।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार सतयुग और कलियुग कैसे आते हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, जब समाज में उच्चस्तरीय प्रतिभाओं का पौरुष (सकारात्मक पुरुषार्थ) उतरता है तो सतयुग आता है, जो ऋषियुग का ही प्रकट रूप है। इसके विपरीत, जब असुरता (नकारात्मकता, स्वार्थ) बढ़ती है तो कलहयुग या कलियुग आ धमकता है।

3. प्रश्न: "करिष्ये वचनं तव" (आपका आदेश मानूँगा) कहने में अर्जुन ने क्या समझा?

उत्तर: अर्जुन ने यह समझा कि यह युद्ध उसकी व्यक्तिगत इच्छा या अनिच्छा का प्रश्न नहीं है, बल्कि एक बड़ी दैवी योजना का हिस्सा है। उसने यह भी समझा कि वह कर्ता नहीं, बल्कि ईश्वर की योजना को पूरा करने का एक माध्यम (निमित्त) मात्र है और इसी में उसका परम श्रेय है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: जोन ऑफ आर्क, महात्मा गाँधी और संत विनोबा के उदाहरणों के माध्यम से लेखक क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तर: इन उदाहरणों से लेखक यह सिद्ध करना चाहते हैं कि जब किसी व्यक्ति के पीछे दिव्यचेतना जुड़ जाती है, तो वह बिना पारंपरिक योग्यता (जैसे रणकौशल या राजनीतिक पद) के भी असंभव लगने वाले ऐतिहासिक कार्य कर सकता है। उनकी सफलता का स्रोत उनका पद या सांसारिक कुशलता नहीं, बल्कि उनका आत्मबल और दैवी योजना के साथ जुड़ाव था।

2. प्रश्न: "घाटे में तू ही रहेगा-श्रेय गँवा बैठेगा और उस गौरव से भी वंचित रहेगा जो विजेता और राज्यसिंहासन के रूप में मिला करता है।" इस कथन में 'घाटा', 'श्रेय' और 'गौरव' का गहरा आध्यात्मिक अर्थ क्या है?

उत्तर: यहाँ 'घाटा' केवल भौतिक हार नहीं, बल्कि ईश्वर की योजना का हिस्सा बनने का अवसर खो देना है। 'श्रेय' का अर्थ है महान कार्य का निमित्त बनने का पुण्य और यश प्राप्त करना। 'गौरव' का अर्थ केवल राज्यसिंहासन नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति और इतिहास में अमर हो जाने का सम्मान है। भगवान कृष्ण अर्जुन

को समझा रहे थे कि अहंकारवश या मोहवश दैवी योजना से मुँह मोड़ने वाला व्यक्ति सबसे बड़े आध्यात्मिक लाभ से वंचित रह जाता है।

अध्याय 6: मानवीय पुरुषार्थ एवं दैवी शक्ति का युग्म सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: बड़े उद्देश्यों के लिए साहस कहाँ से आता है?

उत्तर: ऊँचे उद्देश्यों के लिए उभरने वाला सत्साहस प्रायः दैवी होता है।

2. प्रश्न: इंग्लैंड के प्रधानमंत्री ने जर्मनी की बमबारी के समय जनता में उत्साह जगाने के लिए कौन-सा नारा दिया था?

उत्तर: उन्होंने "वी फॉर विक्ट्री" (V for Victory) का नारा दिया था, जिसका अर्थ था कि अंत में जीत इंग्लैंड की ही होगी।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, पृथ्वी पर पहली बार कौन-सा ऐतिहासिक अवसर मिला है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, यह पहला अवसर है जब अधिकांश राजा-प्रजा के बिगड़े हुए चिंतन और चरित्र को नए सिरे से उत्कृष्टता की दिशा में ढाला जाना है।

4. प्रश्न: मानवीय पुरुषार्थ की सफलता के लिए दैवी शक्ति का सहयोग क्यों आवश्यक है?

उत्तर: क्योंकि दैवी शक्ति के बिना मानवीय पुरुषार्थ अपनी भूलों, कमजोरियों और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण असफल हो सकता है। जैसे पीछे की हवा वाहन को तेज गति देती है, वैसे ही दैवी सहयोग सफलता को संभव बनाता है।

5. प्रश्न: क्षुद्र स्तर के प्राणी आमतौर पर किस तरह की लड़ाई लड़ते हैं?

उत्तर: क्षुद्र स्तर के प्राणी केवल स्वार्थसिद्धि की लड़ाई ही लड़ते हैं, जिसे लेखक ने मुहल्लों में कुत्तों जैसी लड़ाई कहा है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "ध्वंस की अपेक्षा सृजन के लिये कहीं अधिक सामर्थ्य और साधनों की आवश्यकता पड़ती है।" इस कथन का युग परिवर्तन के सन्दर्भ में क्या महत्त्व है?

उत्तर: इसका महत्त्व यह है कि पिछले समय में जो विनाश (जैसे प्रदूषण, अनाचार) हुआ है, उसे सुधारने और नवसृजन करने के लिए उससे कई गुना अधिक शक्ति, योजना और सामर्थ्य की आवश्यकता होगी। ध्वंस करना आसान है, पर सृजन के लिए उच्चस्तरीय प्रतिभा और पराक्रम चाहिए।

2. प्रश्न: लेखक ने इंग्लैंड की हारती बाजी के जीतने का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: यह उदाहरण यह समझाने के लिए दिया गया है कि कैसे एक सकारात्मक नारे (वी फॉर विक्ट्री) से

जनता में नया मनोबल उभरा और उस मनोबल के सहारे बढ़े हुए पराक्रम ने असंभव लगने वाली जीत को संभव कर दिखाया। यह दर्शाता है कि मनोबल और साहस दैवी अनुग्रह की तरह काम करते हैं।

3. प्रश्न: युग परिवर्तन के कार्य को बुद्ध के 'धर्म-चक्र प्रवर्तन' जैसा क्यों कहा गया है?

उत्तर: इसे बुद्ध के 'धर्म-चक्र प्रवर्तन' जैसा इसलिए कहा गया है क्योंकि यह कार्य भी उतना ही व्यापक और मौलिक है। इसमें केवल बाहरी व्यवस्था नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के चिंतन और चरित्र को सामूहिक रूप से उत्कृष्टता की ओर मोड़ना है, जिसके लिए वरिष्ठ प्रतिभाओं को एकजुट होकर प्रयास करना होगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि मात्र मानवीय भाग-दौड़ से युग परिवर्तन जैसा बड़ा काम पूरा नहीं हो सकता?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि जब मनुष्य अपने छोटे से परिवार के झगड़े और मनमुटाव को काबू नहीं कर पाता, तो यह कैसे संभव है कि कुछ लोग थोड़ी सी योजनाओं के सहारे 600 करोड़ लोगों की ढेरों दुष्प्रवृत्तियों को बदल सकेंगे। इतने बड़े और जटिल कार्य के लिए मानवीय पुरुषार्थ के साथ दैवी शक्ति का युग्म (जोड़ी) अनिवार्य है, अन्यथा छोटी-छोटी कठिनाइयाँ ही प्रगति का रास्ता रोक देंगी।

2. प्रश्न: साहस और दुस्साहस में क्या अंतर है? दैवी अनुग्रह किससे जुड़ा है और क्यों?

उत्तर: दुस्साहस का प्रयोग दुष्प्रयोजनों के लिए होता है, जैसे लुटेरे-हत्यारे या नेपोलियन जैसे व्यक्ति करते हैं। वहीं, सत्साहस ऊँचे और सकारात्मक उद्देश्यों के लिए उभरता है। दैवी अनुग्रह सत्साहस से जुड़ा है, क्योंकि यह स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ और बड़े लक्ष्यों (जैसे युग परिवर्तन) के लिए व्यक्ति को प्रेरित करता है। जब साहस ऊँचे उद्देश्यों से जुड़ जाता है, तब वह दैवी शक्ति का रूप ले लेता है और असंभव को भी संभव बना देता है।

अध्याय 7: पात्रता से दैवी अनुग्रह की प्राप्ति

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: दैवी अनुग्रह या शक्तियाँ प्राप्त करने की पहली शर्त क्या है?

उत्तर: दैवी शक्तियों के अवतरण के लिए पहली शर्त साधक की पात्रता, पवित्रता और प्रामाणिकता है।

2. प्रश्न: वर्षा के जल का उदाहरण देकर पात्रता को कैसे समझाया गया है?

उत्तर: जैसे वर्षाकाल में खुले में रखा बर्तन अपनी क्षमता (पात्रता) के अनुसार ही भरता है—छोटी कटोरी कम और बड़ी बाल्टी पूरी भर जाती है, वैसे ही व्यक्ति अपनी पात्रता के अनुसार ही दैवी अनुग्रह पाता है। ऊँचे टीलों पर पानी नहीं टिकता, जबकि गहरे सरोवर लबालब भर जाते हैं।

3. प्रश्न: आध्यात्मिक सिद्धियों को किसकी पुत्रियाँ कहा गया है और उन्हें पाने के लिए व्यक्ति को कैसा होना चाहिए?

उत्तर: आध्यात्मिक सिद्धियों को ईश्वर की पुत्रियाँ कहा गया है, और उन्हें प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को भीतर और बाहर, दोनों से सर्वांग सुन्दर होना चाहिए। यही पात्रता की परिभाषा है।

4. प्रश्न: क्या चापलूसी या रिश्तत से दैवी अनुग्रह मिल सकता है?

उत्तर: नहीं, जैसे कोई अफसर रिश्तत या खुशामद से किसी को अनुचित पद दे दे तो उसकी न्यायनिष्ठा पर सवाल उठता है, वैसे ही ईश्वर भी पात्रता के शाश्वत नियम से बँधा है। यह लाभ मात्र चापलूसी से नहीं मिलते।

5. प्रश्न: ईश्वर की अनुकम्पा किन्हें मिलती है?

उत्तर: ईश्वर की अनुकम्पा उन्हें मिलती है, जो दूसरों पर अनुकम्पा करने में रुचि रखते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "असुरों की निष्ठुरता और अनैतिकता प्रसिद्ध है, इसलिये उनका अन्त भी अन्यत्र से दौड़ पड़ने वाली निष्ठुरता के द्वारा ही होता है।" इस कथन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति का स्वभाव ही उसके प्रति होने वाले व्यवहार को निर्धारित करता है। असुर अपने निष्ठुर और स्वार्थी स्वभाव के कारण ईश्वर और दूसरों की अनुकम्पा खो देते हैं। उनका व्यवहार ही उनके विनाश का कारण बनता है, क्योंकि प्रकृति का नियम है कि जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि "देवता उतने मूर्ख हैं नहीं, जितने कि समझे जाते हैं"?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि लोग यह मानकर पूजा-पाठ करते हैं कि छोटे-मोटे उपहारों और क्रिया-कलापों से देवताओं को भरमाकर बड़ी-बड़ी मनोकामनाएँ पूरी करा लेंगे। लेकिन देवता वास्तविकता (पात्रता और प्रामाणिकता) परखने में प्रवीण होते हैं और वे ऐसे छोटे-मोटे लालच में नहीं आते। यही कारण है कि पात्रता के बिना पूजा करने वाले अधिकांश लोग निराश होते हैं।

3. प्रश्न: पात्रता का विकास और दैवी अनुग्रह की प्राप्ति, इन दोनों में क्या संबंध है?

उत्तर: इन दोनों में सीधा और अटूट संबंध है। पात्रता कारण है और दैवी अनुग्रह उसका परिणाम। व्यक्ति जैसे-जैसे आत्म-परिष्कार, पवित्रता, प्रामाणिकता और उदारता के माध्यम से अपनी पात्रता बढ़ाता है, वैसे-वैसे दैवी अनुग्रह स्वतः ही उसकी ओर खिंचता चला आता है, ठीक वैसे ही जैसे चुम्बक लोहे को खींचता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: पात्रता अर्जित करने की प्रक्रिया को लेखक ने किन दो मुख्य गुणों—प्रामाणिकता और उदारता—से जोड़ा है? विस्तार से समझाएँ।

उत्तर: लेखक ने पात्रता के लिए दो गुणों को अनिवार्य बताया है:

◦ **प्रामाणिकता:** इसका अर्थ है जीवन के हर पक्ष में आदर्शवादिता का समावेश। व्यक्ति का चिंतन, चरित्र और व्यवहार उत्कृष्ट होना चाहिए। जैसे स्वर्णकार खरे सोने को ही मूल्य देता है, वैसे ही ईश्वर भी प्रामाणिक व्यक्ति को ही अपनी कृपा सौंपते हैं।

◦ **उदारता:** इसका अर्थ है दूसरों के प्रति करुणा, ममता और सेवा का भाव रखना। जो व्यक्ति संकीर्ण स्वार्थ छोड़कर परमार्थ के लिए अपनी उपलब्धियों का उपयोग करता है, वह ईश्वरीय उदारता को अपनी ओर आकर्षित करता है। निष्ठुर और कृपण व्यक्ति दैवी अनुकम्पा से वंचित रह जाता है।

2. प्रश्न: "लोग कम कीमत में बहुमूल्य वस्तुएँ पाने की आशा लगाने लगते हैं और जब वह विसंगति गलत सिद्ध होती है तो...अनास्थावान् ही बन जाते हैं।" इस पंक्ति में बताई गई समस्या का मूल कारण क्या है और इसका समाधान कैसे हो सकता है?

उत्तर: इस समस्या का **मूल कारण** अध्यात्म के वास्तविक स्वरूप को न समझना है। लोग पूजा-पाठ (कम कीमत) को एक जादुई शॉर्टकट मानकर उससे बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ और सफलताएँ (बहुमूल्य वस्तु) पाना चाहते हैं, जबकि वे पात्रता और पुरुषार्थ के वास्तविक मूल्य को चुकाने के लिए तैयार नहीं होते। **समाधान** यह है कि लोगों को यह समझना होगा कि अध्यात्म का सच्चा मार्ग आत्म-परिष्कार और लोकमंगल है। पूजा-पाठ केवल उस मार्ग पर चलने के लिए प्रतीक और प्रेरणा हैं। जब व्यक्ति पात्रता अर्जित करने के सही मार्ग को अपनाएगा, तो उसे निराशा नहीं होगी और उसकी आस्था सुदृढ़ होगी।

अध्याय 8: उदारता जन्मदात्री है प्रामाणिकता की सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: पूजा-पाठ का वास्तविक उद्देश्य क्या है?

उत्तर: पूजा-पाठ का वास्तविक उद्देश्य आत्म-परिष्कार और सत्प्रवृत्ति-सम्बर्धन की उदारता जगाना है।

2. प्रश्न: ईश्वर की अनुकम्पा किन्हें प्राप्त होती है?

उत्तर: ईश्वर की अनुकम्पा उन्हें प्राप्त होती है, जो दूसरों पर अनुकम्पा करने में रुचि रखते हैं।

3. प्रश्न: उदारता का ईश्वर की भक्ति से क्या संबंध है?

उत्तर: उदारमना होना ईश्वर-भक्ति का अविच्छिन्न अंग है। कृपणता, निष्ठुरता और संकीर्ण स्वार्थपरता के रहते सच्ची भक्ति संभव नहीं है।

4. प्रश्न: संत और भक्तजन अमीर क्यों नहीं रहते?

उत्तर: क्योंकि वे अपनी उपलब्धियों का न्यूनतम उपयोग करके बची हुई संपत्ति को प्रसन्नतापूर्वक परमार्थ के कार्यों में लगा देते हैं।

5. प्रश्न: साधना का वास्तविक अर्थ क्या है?

उत्तर: साधना का अर्थ जीवनचर्या के हर पक्ष में आदर्शवादिता और प्रामाणिकता का समावेश करना है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार देवता उतने मूर्ख क्यों नहीं हैं, जितना लोग समझते हैं?

उत्तर: क्योंकि लोग सोचते हैं कि वे छोटे-मोटे उपहारों और क्रिया-कलापों से देवताओं को भरमाकर बड़ी-बड़ी मनोकामनाएँ पूरी करा लेंगे। लेकिन देवता वास्तविकता और पात्रता परखने में प्रवीण होते हैं और ऐसे लालच में नहीं आते।

2. प्रश्न: "पीतल को सोना बनाकर बेचने की फिराक में फिरने वाले को हर कहीं दुत्कारा जाता है।" इस कथन का अध्यात्म के संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति भीतर से घटिया (पीतल जैसा) होते हुए भी बाहरी पूजा-पाठ के दिखावे (सोने जैसा) से ईश्वर को धोखा देकर लाभ पाना चाहता है, उसे अंततः निराशा ही मिलती है। ईश्वर प्रामाणिकता की कसौटी पर ही अनुग्रह देते हैं।

3. प्रश्न: प्रकृति के उदाहरणों (बादल, समुद्र, नदी, गाय, धरती) से उदारता के सिद्धांत को कैसे समझाया गया है?

उत्तर: इन उदाहरणों से समझाया गया है कि प्रकृति में देने का नियम काम करता है। बादल बरसते हैं तो समुद्र उन्हें फिर भर देता है; गाय दूध देती है तो उसका थन फिर भर जाता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति उदारतापूर्वक परमार्थ करता है, उसे समाज का सहयोग और ईश्वर का अनुदान निरंतर मिलता रहता है और उसके पास कभी कमी नहीं होती।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अधिकांश लोग पूजा-पाठ करने के बाद भी निराश और अनास्थावान क्यों बन जाते हैं?

उत्तर: वे इसलिए निराश होते हैं क्योंकि वे "कम कीमत में बहुमूल्य वस्तुएँ" पाना चाहते हैं। वे पूजा-पाठ (कम कीमत) को एक शॉर्टकट मानकर पात्रता और आत्म-परिष्कार के वास्तविक मूल्य को चुकाए बिना ही बड़ी सिद्धियों (बहुमूल्य वस्तु) की आशा करते हैं। जब उनकी यह अनुचित आशा पूरी नहीं होती, तो वे साधना, देवता या अपने भाग्य को दोष देते हुए अनास्थावान बन जाते हैं।

2. प्रश्न: प्रामाणिकता और उदारता ये दोनों गुण दैवी अनुग्रह पाने के लिए एक साथ क्यों आवश्यक हैं?

उत्तर: प्रामाणिकता व्यक्ति के आंतरिक चरित्र (सोच, व्यवहार) को उत्कृष्ट बनाती है, जिससे वह ईश्वर के अनुदान को धारण करने के योग्य बनता है। उदारता उस अर्जित योग्यता और सामर्थ्य को लोक-कल्याण में लगाने की प्रवृत्ति है। यदि व्यक्ति प्रामाणिक है पर उदार नहीं, तो उसकी शक्ति स्वार्थ में सीमित रह जाएगी।

यदि वह उदार है पर प्रामाणिक नहीं, तो उसके कार्यों में गहराई और विश्वसनीयता नहीं होगी। इसलिए, ईश्वर की कृपा पाने और उसका सदुपयोग करने के लिए ये दोनों गुण एक-दूसरे के पूरक के रूप में अनिवार्य हैं।

अध्याय 9: जीवन-साधना एवं ईश-उपासना

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: साधना के तीन प्रमुख चरण कौन-से हैं?

उत्तर: साधना के तीन चरण हैं—इन्द्रिय-संयम, अर्थ-संयम और विचार-संयम।

2. प्रश्न: दीपक जलाने और पुष्प चढ़ाने का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

उत्तर: दीपक जलाने का अर्थ है स्वयं दीपक की तरह जलकर दूसरों को प्रकाश देना। पुष्प चढ़ाने का अर्थ है अपने जीवन को सुंदर, कोमल और सुशोभित बनाना।

3. प्रश्न: ध्यान का क्या अर्थ है?

उत्तर: ध्यान का अर्थ है अपनी मानसिकता को किसी विशेष लक्ष्य पर अविचल भाव से केंद्रित करना।

4. प्रश्न: मनुष्य की निर्मलता का ईश्वर-दर्शन से क्या संबंध है?

उत्तर: मनुष्य जितना निर्मल होता जाता है, उसे अपनी आत्मा के दर्पण में उतनी ही स्पष्ट ईश्वर की झाँकी होने लगती है।

5. प्रश्न: आत्म-साक्षात्कार क्या है?

उत्तर: आत्मा के दर्पण में ईश्वर की झाँकी होना या प्रसुप्ति का जागरण में बदलना ही आत्म-साक्षात्कार है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने पूजा-कृत्यों को "संकेत मात्र" या "मील का पत्थर" क्यों कहा है?

उत्तर: क्योंकि पूजा-कृत्य स्वयं में लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि वे केवल सही दिशा (जीवन-साधना) की ओर संकेत करते हैं। जैसे मील का पत्थर रास्ता बताता है पर मंजिल नहीं होता, वैसे ही पूजा-अर्चा हमें आत्म-परिष्कार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।

2. प्रश्न: "साधना का प्रयोजन है—जीवन-साधना।" इस पंक्ति का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि साधना का असली उद्देश्य कुछ देर की पूजा-अर्चा नहीं, बल्कि पूरे जीवन को साधना है। इसमें अपने साथ कठोरता (संयम-अनुशासन) और दूसरों के साथ उदारता का व्यवहार करना शामिल है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार किसी व्यक्ति की वरिष्ठता और महत्ता की जाँच कैसे की जानी चाहिए?

उत्तर: किसी व्यक्ति की वरिष्ठता की जाँच दो आधारों पर करनी चाहिए: पहला, उसने अपने व्यक्तित्व, चिंतन, चरित्र और व्यवहार में सामान्य लोगों से अधिक उत्कृष्टता का समावेश किया है या नहीं। दूसरा, लोकमंगल के कार्यों में उसका अनुदान कितना बड़ा-चढ़ा रहा है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: यदि कोई व्यक्ति केवल पूजा-पाठ के क्रिया-कृत्यों को ही सब कुछ मान ले और जीवन-साधना की उपेक्षा करे तो क्या परिणाम होगा?

उत्तर: यदि कोई ऐसा करता है तो उसकी पूजा "निर्जीव उपक्रम" बनकर रह जाएगी। वह आत्म-प्रवंचना का शिकार होगा, क्योंकि वह पात्रता और प्रामाणिकता की उपेक्षा कर रहा है। ऐसे व्यक्ति को कोई ठोस या सार्थक प्रगति नहीं मिलती, क्योंकि उसने अध्यात्म का शॉर्टकट अपनाने की भूल की है। उसकी पूजा बाजीगर के चमत्कार की तरह होगी, जो दिखता तो है पर उससे कोई वास्तविक लाभ नहीं होता।

2. प्रश्न: जप, ध्यान, प्राणायाम जैसे साधना के विभिन्न अंगों का अंतिम और ஒருங்கிணைந்த (integrated) लक्ष्य क्या है?

उत्तर: इन सभी साधना-अंगों का अंतिम लक्ष्य मनुष्य के व्यक्तित्व का समग्र रूपांतरण है। जप मन को एकाग्र करता है, ध्यान लक्ष्य पर केंद्रित करता है, और प्राणायाम प्राणशक्ति बढ़ाता है। इन सबका मिला-जुला उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यक्ति का बाहरी और भीतरी जीवन मानवीय गरिमा के साँचे में ढले, उसके दोष-दुर्गुण समाप्त हों और वह इतना निर्मल हो जाए कि उसे आत्म-साक्षात्कार हो सके। यही स्थिति उसे सिद्धपुरुष या महामानव बनाती है।

अध्याय 10: प्रखर प्रतिभा का उद्गम स्रोत

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: प्रखर प्रतिभा का उद्गम स्रोत क्या है?

उत्तर: प्रखर प्रतिभा का उद्गम स्रोत ईश्वर है, जिसे दूसरे शब्दों में सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय भी कहा जा सकता है।

2. प्रश्न: व्यक्तित्व का परिष्कार और उदात्तीकरण ही वास्तविक क्या है?

उत्तर: व्यक्तित्व का परिष्कार और उदात्तीकरण ही वह योगाभ्यास है, जिसके माहात्म्य को लोक और परलोक की सफलताएँ देने वाला बताया गया है।

3. प्रश्न: मनुष्य को अतिरिक्त चेतना (प्राणशक्ति) की आवश्यकता कब पड़ती है और वह उसे कैसे प्राप्त करता है?

उत्तर: जब मनुष्य को कामचलाऊ चेतना से अधिक की आवश्यकता पड़ती है, तो वह योग और तपपरक साधना करता है।

4. प्रश्न: योगदर्शन की अष्टांग-साधना में सर्वप्रथम किसकी गणना की गई है?

उत्तर: योगदर्शन में अष्टांग-साधना में सर्वप्रथम यम-नियम की गणना की गई है, जो अन्तरंग और बहिरंग सुव्यवस्था के ही दो रूप हैं।

5. प्रश्न: पूजा-उपासना के समस्त कर्मकाण्डों का उद्देश्य क्या है?

उत्तर: पूजा-उपासना के समस्त कर्मकाण्डों का उद्देश्य व्यक्ति की पशु-प्रवृत्तियों को घटाना और दैवी सम्पदाओं को बढ़ाना है।

6. प्रश्न: मनुष्य अपनी अर्जित प्राणशक्ति का उपयोग कैसे कर सकता है?

उत्तर: मनुष्य अपनी अर्जित प्राणशक्ति का सदुपयोग या दुरुपयोग करने के लिए स्वतंत्र है। दैत्य स्तर के लोग इसका दुरुपयोग करते हैं, जैसे तांत्रिक, अघोरी आदि करते रहे हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "जीवट का धनी" हुए बिना उन्नतिशील बनना संभव क्यों नहीं है?

उत्तर: क्योंकि जीवट वाले व्यक्ति ही सामान्य परिस्थितियों में भी अपने लिए उपयुक्त वातावरण बनाते हैं और व्यवहारकुशलता से इच्छित क्षेत्र में प्रगति करते हैं। वे अपनी तत्परता, तन्मयता और जागरूकता के सहारे सफलता अर्जित करते हैं, जबकि अनगढ़ और अव्यावहारिक लोग केवल गुजारा चलाते हैं या संकटों में फँसे रहते हैं।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, मात्र पूजापरक क्रिया-कृत्यों को ही सब कुछ मान लेने का क्या परिणाम होता है?

उत्तर: यदि व्यक्ति उद्देश्य (व्यक्तित्व का परिष्कार) को भूलकर केवल क्रिया-कृत्यों को ही सब कुछ मान लेता है, तो यह चिह्न-पूजा एक "निर्जीव उपक्रम" बनकर रह जाती है। इससे बड़ी-चढ़ी उपलब्धियों की आशा करने वालों को अंत में निराश ही होना पड़ता है।

3. प्रश्न: आत्मिक प्रगति के लिए कौन से दो मोर्चे सँभालने पड़ते हैं?

उत्तर: बड़ी उपलब्धियों के लिए दो मोर्चे सँभालने पड़ते हैं: पहला, अपनी निजी दुर्बलताओं और दुर्गुणों को घटाना-मिटाना, क्योंकि ये शक्ति को नष्ट कर देते हैं। दूसरा, व्यापक क्षेत्र के बड़े कामों के लिए अपनी सामर्थ्य को लगाना।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने अनगढ़ और पुरुषार्थी लोगों से ऊँचा एक और स्तर किसे बताया है और उसकी विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: लेखक ने इन दोनों से ऊँचा स्तर "देवमानव" का बताया है। इसकी विशेषता यह है कि वे केवल भौतिक सफलता (जो पुरुषार्थी पाते हैं) तक सीमित नहीं रहते, बल्कि अपने गुण-कर्म-स्वभाव को सुनियोजित और

सुसंस्कृत बनाते हैं। इसके परिणामस्वरूप, उन्हें आत्मिक सन्तोष, लोक-सम्मान और दैवी अनुग्रह, तीनों एक साथ प्राप्त होते हैं।

2. प्रश्न: अध्यात्म को "जादूगरी" या "आसमान से बरसने वाले वरदान" क्यों नहीं माना जा सकता? लेखक के अनुसार इसका वास्तविक स्वरूप क्या है?

उत्तर: अध्यात्म जादूगरी नहीं है क्योंकि यह चापलूसी करने वालों को आँखें बंद करके निहाल करने वाला धंधा नहीं है। इसका वास्तविक स्वरूप देवत्व यानी आत्म-जागरण की एक स्थिति है। इसमें व्यक्ति अपने ही भीतर सोई हुई शक्तियों (प्रसुप्त वर्चस्व) को प्रयत्नपूर्वक जगाता है और उनका सत्प्रयासों में उपयोग करके अधिकाधिक लाभ उठाता है। यह बाहरी कृपा से अधिक आंतरिक पुरुषार्थ पर निर्भर है।

अध्याय 11: युग परिवर्तन प्रतिभा ही करेगी

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युगनिर्माण जैसा भारी-भरकम काम किसके बिना पूरा नहीं हो सकता?

उत्तर: युगनिर्माण जैसा विश्वव्यापी और भारी-भरकम काम वरिष्ठ प्रतिभासम्पन्नों के कन्धा लगाए बिना पूरा नहीं हो सकता।

2. प्रश्न: भूतकाल में मनस्वी लोगों द्वारा किए गए कौन-से आश्चर्यजनक कार्यों का उल्लेख किया गया है?

उत्तर: भूतकाल के आश्चर्यजनक कार्यों में अगस्त्य का समुद्र सोखना, हनुमान का पर्वत उठाना और विश्वामित्र के तत्त्वावधान में रामराज्य की स्थापना का उल्लेख है।

3. प्रश्न: प्रतिभाओं का निखार किस पर निर्भर है?

उत्तर: प्रतिभाओं का निखार किसी की कृपा-अनुकम्पा पर नहीं, बल्कि पूरी तरह अपने बस की बात है। इसे अपने मनोबल और प्रयास से दिशाबद्ध किया जा सकता है।

4. प्रश्न: युग परिवर्तन के लिए शरीरबल या बुद्धिबल से अधिक किसकी आवश्यकता है?

उत्तर: युग परिवर्तन के लिए शरीरबल, साधनाबल या बुद्धिबल से अधिक गाँधी, बुद्ध, विनोबा जैसे प्रतिभावानों की आवश्यकता है।

5. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी में आंदोलन की भागीदारी के लिए आरंभ में कौन-से हल्के काम सौंपे गए हैं?

उत्तर: आरंभ में हल्के काम सौंपे गए हैं, जैसे—युगसन्धि पुरश्चरण के अन्तर्गत जप, साधना, समयदान, अंशदान, साप्ताहिक सत्संग, झोला-पुस्तकालय आदि।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि "यह नया प्रयोग नहीं है"?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि भूतकाल में भी ऐसे ही प्रयोग (प्रतिभाओं के उभार) होते रहे हैं,

जिनसे युग बदलते रहे और मनुष्य अपनी प्रथा-परम्पराओं में आमूलचूल परिवर्तन करता रहा है।

2. प्रश्न: नवनिर्माण की संरचना करने वाली सत्ता ने इस पुण्य प्रयोजन के लिए क्या तैयारी की है?

उत्तर: नवनिर्माण की संरचना करने वाली सत्ता ने इस पुण्य प्रयोजन की पूर्ति के लिए प्राणवान्, जीवट के धनी व्यक्तियों की एक अच्छी-खासी सेना खड़ी करने की आवश्यकता अनुभव की है और उसे समय रहते जुटा लेने की तैयारी की है।

3. प्रश्न: आरंभिक हल्के कार्यों (जैसे जप, समयदान) का उद्देश्य क्या है?

उत्तर: इन हल्के कार्यों का उद्देश्य व्यक्ति की अभिरुचि और आस्था को बढ़ाना है। इन्हें स्काउट के आरंभिक व्यायाम जैसा समझना चाहिए, जो आगे के बड़े कार्यों के लिए व्यक्ति को तैयार करते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युग परिवर्तन की प्रक्रिया में दैवी शक्ति और प्रतिभावान मनुष्यों की भूमिका में क्या संबंध है? श्रेय किसे और क्यों मिलेगा?

उत्तर: इस प्रक्रिया में योजना, प्रेरणा, दक्षता और समर्थता तो भगवान (दैवी शक्ति) की काम करेगी, लेकिन श्रेय उन लोगों को मिलेगा जिनकी अन्तरात्मा में युग के अनुरूप श्रद्धा और लगन जाग सकी है। यह ठीक वैसा ही है जैसे मुरगे की बाँग सुनकर असंख्य लोग जागते हैं और अरुणोदय का लाभ उठाते हैं; जगाने का श्रेय मुरगे को मिलता है, भले ही सूर्योदय एक प्राकृतिक घटना है।

2. प्रश्न: "प्रतिभाओं में हुंकार जब भी उठी है, उसने विशिष्ट स्तर की प्रतिभाओं को विकसित किया है।" इस कथन का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इसका तात्पर्य है कि जब समाज में कुछ अग्रणी प्रतिभावान व्यक्ति एक महान उद्देश्य के लिए संकल्प लेते हैं (हुंकार भरते हैं), तो वे अपने प्रभाव और प्रेरणा से अपने संपर्क क्षेत्र में अन्य लोगों को भी उभार सकते हैं। वे सामान्य लोगों (जैसे गीध, गिलहरी, शबरी, भील) में भी असाधारण क्षमताएँ जगाकर उनसे चमत्कार जैसे कार्य करा सकते हैं।

अध्याय 12: अनगढ़ता मिटे, सुगढ़ता विकसित हो

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मनुष्य को जन्मजात रूप से क्या मिला है?

उत्तर: मनुष्य को जन्मजात रूप से विभूतियों का वैभव प्रचुर मात्रा में मिला है, पर वह प्रसुप्ति की तिजोरी में बन्द रहता है।

2. प्रश्न: आकाश से धरती पर निरंतर किसकी वर्षा होती रहती है?

उत्तर: आकाश से धरती पर निरंतर प्राणतत्त्व की वर्षा होती रहती है।

3. प्रश्न: प्रगति की सुव्यवस्थित व्यवस्था कब बनती है?

उत्तर: जब व्यक्ति अपने गुण, कर्म, स्वभाव को प्रखर-परिष्कृत बनाता है और ईश्वर-सान्निध्य स्थापित करके व्यापक शक्ति को खींचता है, तब प्रगति की सुव्यवस्थित व्यवस्था बनती है।

4. प्रश्न: प्राण और प्रतिभा को सुरम्य उद्यान में बदलने के लिए क्या चाहिए?

उत्तर: प्राण और प्रतिभा को सुरम्य उद्यान में बदलने के लिए एक कुशल माली जैसे अनुभव और सतर्कता भरे प्रयत्न की आवश्यकता होती है।

5. प्रश्न: जो व्यक्ति अपनी उपेक्षा स्वयं करता है, उसका क्या परिणाम होता है?

उत्तर: जो अपनी उपेक्षा स्वयं करता है, वह दूसरों से भी तिरस्कृत होता है और स्वयं भी घाटे में रहता है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने मनुष्य के मानसिक चुम्बकत्व की तुलना पृथ्वी के उत्तर ध्रुव से क्यों की है?

उत्तर: लेखक ने यह तुलना इसलिए की है क्योंकि जैसे पृथ्वी का उत्तर ध्रुव ब्रह्माण्ड से अपने लिए आवश्यक तत्त्व खींचता है और निरर्थक को बाहर फेंक देता है, उसी प्रकार मनुष्य का मानस भी अपनी रुचि और प्रकृति के अनुसार चेतन तत्त्व आकाश से खींचता और छोड़ता है। यदि मानस उच्चस्तरीय है तो वह श्रेष्ठ तत्त्वों को आकर्षित करेगा।

2. प्रश्न: "ईश्वर अंश जीव अविनाशी" का प्रतिपादन कब सोलहों आना सच साबित होता है?

उत्तर: यह कथन तब सच साबित होता है जब व्यक्ति कुशल माली की तरह अपनी अनगढ़ प्रतिभा को सतर्कता भरे प्रयत्न से सुरम्य उद्यान में बदल देता है। जो ऐसा कर पाते हैं, वे ही इस सत्य को पूरी तरह अनुभव करते हैं।

3. प्रश्न: मनुष्य की प्रगति के लिए कौन सी दो क्रियाएँ एक साथ चलनी चाहिए?

उत्तर: मनुष्य की प्रगति के लिए दो क्रियाएँ आवश्यक हैं: पहली, अपने गुण, कर्म, स्वभाव को प्रखर और परिष्कृत बनाना (आत्म-परिष्कार) और दूसरी, ईश्वर-सान्निध्य स्थापित करके अदृश्य जगत के वैभव को अपनी ओर आकर्षित करना (दैवी अनुग्रह पाना)।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "उर्वरता भूमि में होती है, पर उसके प्रकट होने के लिये ऊपर से जल बरसना भी आवश्यक है।" इस कथन का मानवीय व्यक्तित्व के विकास के संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि मनुष्य के भीतर जन्मजात रूप से महान बनने की क्षमता (उर्वरता) मौजूद है। लेकिन इस छिपी हुई क्षमता को प्रकट करने के लिए बाहरी प्रेरणा और दैवी अनुग्रह (जल की वर्षा) भी

आवश्यक है। केवल आंतरिक क्षमता या केवल बाहरी कृपा से पूर्ण विकास संभव नहीं; दोनों का समन्वय ही व्यक्ति को सुसम्पन्न बनाता है।

2. प्रश्न: व्यक्ति अपने जीवन में घाटे में क्यों रह जाता है, जबकि उसके पास विभूतियों का प्रचुर वैभव होता है?

उत्तर: व्यक्ति घाटे में इसलिए रह जाता है क्योंकि वह अपनी ही उपेक्षा करता है। उसके पास विभूतियों का वैभव तो है, पर वह प्रसुप्ति की तिजोरी में बंद है। उसे प्रयत्नपूर्वक उभारने और काम में लाने की आवश्यकता है। जो व्यक्ति अपनी इस आंतरिक सम्पदा के प्रति अवमानना और अवहेलना करता है, वह उसे विकसित करने का प्रयास नहीं करता और परिणामस्वरूप घाटे में रह जाता है।

अध्याय 13: बड़े प्रयोजन के लिए प्रतिभावानों की आवश्यकता

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी में किस प्रकार के लोगों की बड़ी संख्या में आवश्यकता पड़ेगी?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी में प्रखर प्रतिभाओं की बड़ी संख्या में आवश्यकता पड़ेगी।

2. प्रश्न: पिछली शताब्दी में फैले प्रदूषण और दुर्भाव का दोष सामान्यजनों से अधिक किसका है?

उत्तर: इसका दोष सामान्यजनों से कम और प्रतिभाशालियों द्वारा किये गये अनर्थ का अधिक है।

3. प्रश्न: तोड़ने वाले मजदूर और कलात्मक निर्माण करने वाले कारीगर में क्या अंतर है?

उत्तर: तोड़ने वाले मजदूर सस्ते मिल जाते हैं, किन्तु कलात्मक निर्माण करने के लिए अधिक कुशल कारीगर चाहिए।

4. प्रश्न: युगसृजन के लिए पहला अनुदान किसे प्रस्तुत करना चाहिए?

उत्तर: युगसृजन के लिए पहला अनुदान अपने आप से ही प्रस्तुत करने वालों को देना चाहिए, ताकि अन्य लोग भी उनका अनुकरण कर सकें।

5. प्रश्न: युगसृजन में प्रमुख भूमिका कौन सम्पन्न करेगा?

उत्तर: युगसृजन जैसा महान उत्तरदायित्व पूरा करने में स्रष्टा की उच्चस्तरीय सृजन-शक्तियाँ ही प्रमुख भूमिका सम्पन्न करेंगी।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि सुधार की वेला आने पर कचरा बिखेरने वाले वर्ग को ही उसकी सफाई का प्रायश्चित्त करना चाहिए?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि पिछली शताब्दी में जो भी अनर्थ (प्रदूषण, दुर्भाव) हुआ है, उसके

लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार प्रतिभाशाली वर्ग ही है। अतः नैतिक रूप से अब जब सुधार का समय आया है, तो इसकी जिम्मेदारी भी उन्हीं को लेनी चाहिए।

2. प्रश्न: नवनिर्माण में लगाई जाने वाली प्रतिभाओं में कौन-सी विशेष योग्यताएँ होनी चाहिए?

उत्तर: उनमें दूरदृष्टि, कुशलता और तत्परता ऊँचे स्तर की होनी चाहिए। उनका अन्तराल (आंतरिक चरित्र) उज्ज्वल होना चाहिए और उनके पास इतना अवकाश एवं साधन होना चाहिए कि वे विश्वकर्मा जैसी तत्परता से बहुमुखी आवश्यकताओं को सँभाल सकें।

3. प्रश्न: लेखक ने अनगढ़ लोगों की भीड़ की तुलना किससे की है और क्यों?

उत्तर: लेखक ने अनगढ़ लोगों की भीड़ की तुलना मूक दर्शकों से की है, जो केवल खड़े-खड़े देखते रहते हैं। ऐसी भीड़ से केवल असुविधा बढ़ती है और वे गन्दगी और गड़बड़ी ही फैलाते हैं, क्योंकि सृजन का महत्वपूर्ण कार्य केवल सृजेता (प्रतिभाशाली व्यक्ति) ही कर सकता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: उज्ज्वल भविष्य की निकटता की जाँच-पड़ताल कैसे की जा सकती है?

उत्तर: इसकी जाँच का एक ही उपाय है: यह देखना कि कितने लोगों के अन्तःकरण में इस परीक्षा की घड़ी में असाधारण कौशल दिखाने की उमंगें उठ रही हैं और वे स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ को कितना अधिक अपना रहे हैं। जब लोग निजी महत्वाकांक्षाओं में कटौती करके अपना समय, श्रम और साधन युग-कार्य में लगाने लगते हैं, तभी समझना चाहिए कि उज्ज्वल भविष्य निकट है।

2. प्रश्न: "मनुष्य की औसत उपलब्धि तो यही रही है कि वह बनाता कम और बिगाड़ता अधिक है।" इस कथन के आधार पर युगसृजन का कार्य कैसे संभव होगा?

उत्तर: यह कार्य मनुष्य के भरोसे संभव नहीं होगा। चूँकि युगसृजन का लक्ष्य केवल बनाना-ही-बनाना है, इसलिए इसमें स्रष्टा की सृजन-सेना (दैवी शक्ति) ही अग्रिम मोर्चा सँभालेगी। देवमानव कहे जाने वाले व्यक्ति, जिनमें आदर्शों के प्रति सघन श्रद्धा और लगन हो, इस सेना के सैनिक बनेंगे और स्रष्टा की शक्ति के माध्यम से इस महान कार्य को संभव करेंगे।

अध्याय 14: सद्बुद्धि का उभार कैसे हो?

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मनुष्य की सभी विपत्तियों के मूल में सर्वोपरि विपत्ति कौन-सी है?

उत्तर: सभी विपत्तियों के मूल में सर्वोपरि विपत्ति अदूरदर्शिता या अविवेक है।

2. प्रश्न: रामायण के अनुसार, जहाँ सुमति (सद्बुद्धि) होती है, वहाँ क्या होता है?

उत्तर: रामायण के अनुसार, 'जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना', अर्थात् जहाँ विचारशीलता होती है, वहाँ अनेकों

सम्पदाएँ खिंचती चली आती हैं।

3. प्रश्न: गीता के अनुसार, मनुष्य का शत्रु और मित्र कौन है?

उत्तर: गीता के अनुसार, मनुष्य ही अपना शत्रु है और यदि वह चाहे तो अपना सघन सहयोगी मित्र भी बन सकता है।

4. प्रश्न: सहनशीलता को एक महत्त्वपूर्ण गुण क्यों माना गया है?

उत्तर: क्योंकि सहनशीलता के साथ धैर्य और साहस, दोनों जुड़े होते हैं, जिनके सहारे हर कठिनाई को परास्त किया जा सकता है।

5. प्रश्न: निर्माणकर्ताओं की गंध की तुलना किससे की गई है?

उत्तर: निर्माणकर्ताओं की मंद गंध की तुलना चन्दन से की गई है, जो बहुत समीप से ही सूँधी जा सकती है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि "पत्ते सींचने से पेड़ की सुव्यवस्था नहीं बन पड़ती"? इसका मनुष्य की समस्याओं के समाधान से क्या संबंध है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि सतही समस्याओं (जैसे गरीबी, बीमारी) का अलग-अलग इलाज करने से स्थायी समाधान नहीं मिलता। जैसे पेड़ को हरा-भरा रखने के लिए पत्तों की बजाय जड़ को सींचना पड़ता है, उसी प्रकार मनुष्य की सभी समस्याओं की जड़ 'अविवेक' या 'दुर्बुद्धि' है। सद्ज्ञान (सद्बुद्धि) को बढ़ाकर ही सभी समस्याओं का स्थायी निवारण किया जा सकता है।

2. प्रश्न: "हर किसी की अपनी एक अलग दुनिया होती है, जो उसकी अपनी निज की संरचना ही होती है।" इस कथन को उदाहरण सहित समझाएँ।

उत्तर: इसका अर्थ है कि व्यक्ति का सुख-दुःख बाहरी परिस्थितियों से अधिक उसकी अपनी मनःस्थिति पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग गरीबी में भी हँसते हुए जी लेते हैं, जबकि अमीर लोग तृष्णा के कारण दुखी रहते हैं। डरपोक व्यक्ति को घर में चूहे की खड़बड़ भी भूत जैसी लगती है, जबकि साहसी व्यक्ति सुनसान में भी निर्भय रहता है। यह सब मन का खेल है, जो अपनी दुनिया खुद बनाता है।

3. प्रश्न: ध्वंस और सृजन के कार्यों की प्रकृति में क्या मौलिक अंतर है?

उत्तर: ध्वंस की दुर्गन्ध दूर तक फैलती है और दुष्टता भरी दुर्घटनाएँ चर्चा का विषय बन जाती हैं। इसके विपरीत, सृजन (सेवा-सद्भावना) चन्दन की मंद गंध जैसा होता है, जो शांत और अविज्ञापित रहता है। ध्वंस करने वाले शेखी बघारते हैं, जबकि निर्माणकर्मी शांत भाव से अपना कार्य करते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अविवेक या अदूरदर्शिता को सभी दुःखों की जड़ क्यों कहा गया है? यह व्यक्ति के जीवन में कैसे प्रकट

होती है?

उत्तर: इसे सभी दुःखों की जड़ इसलिए कहा गया है क्योंकि यही मनुष्य से अनाचार कराती है और उसके गुण, कर्म, स्वभाव में निकृष्टता लाती है। जैसे एक जड़ से कई टहनियाँ निकलती हैं, वैसे ही एक अविवेक से ही अनेकों समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यह जीवन में इस प्रकार प्रकट होती है कि व्यक्ति समझदार होते हुए भी कुचक्र में फँसता है, भटकाव के कारण ठोकरें खाता है, अशुभ चिंतन से अपना साहस गँवा बैठता है और परिस्थितियों को अपने सुख-दुःख का कारण मानकर स्वयं को असहाय महसूस करता है।

2. प्रश्न: सत्प्रवृत्ति-सम्बर्धन (अच्छाई को बढ़ावा देना) का मार्ग कठिन क्यों है और इस मार्ग पर कौन चल पाता है?

उत्तर: यह मार्ग कठिन है क्योंकि इसके लिए कोई प्रत्यक्ष उदाहरण आसानी से नहीं मिलते, जिससे उत्साह ठंडा पड़ सकता है। साथ ही, संचित कुसंस्कार और वर्तमान गलत प्रचलन भी इस मार्ग में बाधा डालते हैं। इस मार्ग पर केवल दूरदर्शी और सद्भावना-सम्पन्न व्यक्ति ही चल पाते हैं, जिनमें फूटे खण्डहरों को भव्य भवन में बदलने की हिम्मत और योजना होती है।

अध्याय 15: इन दिनों की सर्वोपरि आवश्यकता

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इन दिनों सबसे बड़ा और सर्वोपरि काम कौन-सा है?

उत्तर: इन दिनों का सबसे बड़ा काम जन-जन के मन-मस्तिष्क पर छाई हुई दुर्भावना का निराकरण करना है।

2. प्रश्न: सभी बीमारियों (दरिद्रता, अशिक्षा आदि) का अलग-अलग इलाज कारगर क्यों नहीं हो सकता?

उत्तर: क्योंकि इन सभी का मूल कारण एक ही है—हेय चिन्तन। जैसे पत्तों को सींचने से पेड़ हरा नहीं होता, वैसे ही सतही समस्याओं के अलग-अलग इलाज से स्थायी समाधान नहीं मिलता।

3. प्रश्न: विचार-क्रांति के लिए प्राचीनकाल और आज के समय में क्या अंतर है?

उत्तर: प्राचीनकाल में घर-घर अलख जगाना पड़ता था, पर अब विज्ञान ने प्रेस, लाउडस्पीकर, टेपरेकार्डर जैसे माध्यमों से इस कार्य को सरल बना दिया है, जिससे कम समय में अधिक लोगों तक पहुँचा जा सकता है।

4. प्रश्न: ध्वंस (नष्ट करना) और सृजन (निर्माण करना) में से किसे अधिक श्रेय मिलता है?

उत्तर: श्रेय ध्वंस को नहीं, सृजन को ही मिलता रहा है।

5. प्रश्न: क्या मात्र उपदेशों से लोगों के विचारों में बदलाव लाया जा सकता है?

उत्तर: नहीं, यह कार्य मात्र उपदेशों से नहीं होगा। इसके लिए उपदेश देने वाले का व्यक्तित्व और व्यवहार भी कथन के अनुरूप खरा उतरना चाहिए।

6. प्रश्न: स्रष्टा का अवतरण इन दिनों किस रूप में होना है?

उत्तर: स्रष्टा का अवतरण इस रूप में होना है कि भावनाशील लोग अपनी कुण्ठाओं पर विजय प्राप्त करें, ब्राह्मणोचित (सादा, त्यागमय) जीवन अपनाएँ और अपने व्यक्तित्व को आदर्शवादी बनाएँ।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, लोकमानस में धर्मोपदेश मनोरंजन का साधन बनकर क्यों रह जाता है?

उत्तर: धर्मोपदेश मनोरंजन बनकर इसलिए रह जाता है क्योंकि उपदेश देने वाले आदर्शवादी लोग आसानी से नहीं मिलते जो मन, वचन और कर्म से समर्पित हों। इस विसंगति के कारण सामान्य लोग उनकी बातों पर विश्वास नहीं करते और उपदेश का गहरा प्रभाव नहीं पड़ता।

2. प्रश्न: आदर्शवादी जीवन अपनाने में आर्थिक कमी हो सकती है, फिर भी लेखक इसे बेहतर क्यों मानते हैं?

उत्तर: लेखक इसे बेहतर इसलिए मानते हैं क्योंकि आर्थिक कमी के बदले में जो आत्मसंतोष, लोक-सम्मान और दैवी अनुग्रह मिलता है, वह संकीर्ण स्वार्थ में रोते-कलपते जीवन की तुलना में कहीं अधिक मूल्यवान है।

3. प्रश्न: "विचार क्रान्ति ही सर्वोपरि आवश्यकता है।" इस कथन का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इसका तात्पर्य है कि मनुष्य के सभी कार्यों और परिस्थितियों का निर्माण उसके विचारों से ही होता है। यदि विचारों को शालीनता, सज्जनता और कर्तव्यपरायणता की दिशा में मोड़ दिया जाए, तो उसके सभी कार्य स्वतः ही सुधारात्मक और विकासोन्मुख हो जाएँगे।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विचारों को बदलना सबसे कठिन कार्य क्यों है, जबकि पदार्थों को बदलना सरल है?

उत्तर: विचारों को बदलना इसलिए कठिन है क्योंकि वे लंबे समय तक किए गए कुकर्मों के कारण स्वभाव और आदत का अंग बन जाते हैं और बिना प्रयास के ही प्रकट होते रहते हैं। इसके विपरीत, निर्जीव पदार्थों (जैसे लोहा) को गलाकर आसानी से दूसरा रूप दिया जा सकता है। विचारों के पतन में पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति की तरह नकारात्मक प्रवृत्तियाँ सहयोग करती हैं, जबकि उन्हें ऊँचा उठाने के लिए सैकड़ों गुना अधिक सामर्थ्य और सचेतन प्रयास की आवश्यकता होती है।

2. प्रश्न: पुस्तक के सार संक्षेप के अनुसार "प्रखर प्रज्ञा" क्या है और यह स्रष्टा का "परम प्रसाद" क्यों है?

उत्तर: "प्रखर प्रज्ञा" का अर्थ है वह प्रतिभा जो परिष्कृत हो चुकी है और सद्बुद्धि के रूप में उभरकर सामने आई है। जब मनुष्य अपनी प्रतिभा को जगाकर उसे लोकमंगल में लगा देता है तो वह विवेकवान बनता है और उसकी प्रतिभा देव-स्तर की हो जाती है। इसे स्रष्टा का "परम प्रसाद" इसलिए कहा गया है क्योंकि यह दैवी अनुग्रह के रूप में उन सुपात्रों को मिलती है जिनका अंतःकरण परिष्कृत हो चुका है। यही प्रज्ञा युग परिवर्तन जैसे महान कार्य को संभव बनाएगी, जिससे जन-जन के मन से दुर्भावना का निराकरण होगा और एक नए युग का आरंभ होगा।

- **प्रतिभा** - मानवीय अन्तराल में प्रसुप्त पड़ा विभूतियों का सम्मिश्रण जिस किसी में सघन-विस्तृत रूप में दिखाई पड़ता है, उसे प्रतिभा कहते हैं।
- **दैत्य** - जब मनुष्य अपनी प्रतिभा या सम्पदा का दुरुपयोग अनुचित कार्यों में करने लगता है तो वह दैत्य बन जाता है और दैत्यों जैसा व्यवहार करता है।
- **विवेकवान् (या दूरदर्शी)** - जो व्यक्ति अपनी प्रतिभा को जगाकर लोकमंगल में लगा देता है, वह दूरदर्शी और विवेकवान् कहलाता है।
- **प्रखर प्रज्ञा** - यह परिष्कृत प्रतिभा है जो सद्बुद्धि के रूप में उभरती है और स्रष्टा के परम प्रसाद के रूप में सुपात्रों को मिलती है।
- **विराट् ब्रह्म (या परमात्मा)** - विराट् ब्रह्माण्ड में फैली हुई सत्ता को विराट् ब्रह्म या परमात्मा कहते हैं। यही सर्वव्यापी, न्यायकर्ता, सत्-चित्-आनन्द आदि विशेषणों से जाना जाता है।
- **पात्रता (आध्यात्मिक संदर्भ में)** - साधक की पवित्रता और प्रामाणिकता ही पात्रता की पहली शर्त है। सर्वांग सुन्दर होना—भीतर से भी और बाहर से भी—यही पात्रता की परिभाषा है।
- **उदारता** - वह सद्गुण जिसके अन्तराल में करुणा, ममता और सेवा-सहायता की कोमलता हो।
- **साधना (का अर्थ)** - जीवनचर्या के हर पक्ष में आदर्शवादिता और प्रामाणिकता का समावेश।
- **साधना (का प्रयोजन)** - जीवन-साधना, अर्थात् अपने साथ कड़ाई (संयम-अनुशासन) और दूसरों के साथ उदारता बरतना।
- **संयम-साधना (के तीन चरण)** - इन्द्रिय-संयम, अर्थ-संयम और विचार-संयम।
- **दीपक जलाने का तात्पर्य** - दीपक की तरह स्वयं जलकर सर्वसाधारण के लिये प्रकाश प्रदान करने की अवधारणा को समझना।
- **पुष्प चढ़ाने का तात्पर्य** - जीवन क्रम को सर्वांग सुन्दर, कोमल व सुशोभित रखने का संकल्प लेना।
- **अक्षत चढ़ाने का तात्पर्य** - अपनी आय का एक नियमित अंशदान परमार्थ-प्रयोजन के लिये लगाने का संकल्प।
- **ध्यान (का अर्थ)** - अपनी मानसिकता को किसी विशेष लक्ष्य पर अविचल भाव से केंद्रित रखना।
- **आत्म-साक्षात्कार (या आत्मज्ञान)** - आत्मा के दर्पण में ईश्वर की झाँकी होना या प्रसुप्ति का जागरण में परिवर्तित होना।
- **सामान्य प्राण को महाप्राण में बदलना** - यही ईश्वर-उपासना का उद्देश्य है।
- **योगाभ्यास (वास्तविक)** - व्यक्तित्व का परिष्कार और उदात्तीकरण ही वह योगाभ्यास है, जिसके माहात्म्य को लोक और परलोक की सफलताएँ देने वाला बताया गया है।

- **प्रखर प्रतिभा का उद्गम-स्रोत** - इसका उद्गम-स्रोत ईश्वर है, जिसे दूसरे शब्दों में सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय भी कहा जा सकता है।
- **देवमानव** - वे लोग जो भौतिक सफलताओं से ऊपर उठकर अपने गुण-कर्म-स्वभाव को सुनियोजित व सुसंस्कृत बना लेते हैं, जिससे उन्हें आत्मिक सन्तोष, लोक-सम्मान और दैवी अनुग्रह, तीनों प्राप्त होते हैं।
- **देवत्व** - यह आत्म-जागरण की एक स्थिति विशेष है, जिसमें व्यक्ति अपने ही प्रसन्न वर्चस्व को प्रयत्नपूर्वक जगाकर काम में लाता है।
- **इच्छाशक्ति** - यह संसार की सबसे बड़ी सामर्थ्य है, जिसे अर्जित करना जीवन का वास्तविक लक्ष्य है।
- **अविवेक (या अदूरदर्शिता)** - मनुष्य की सभी विपत्तियों के मूल में जो सर्वोपरि विपत्ति है, उसे ही अविवेक या अदूरदर्शिता कहते हैं।
- **विचार क्रान्ति** - यह सर्वोपरि आवश्यकता है जिसके द्वारा विचारों को शालीनता, सज्जनता, और कर्तव्यपरायणता की दिशा में मोड़कर सभी विकृतियों पर काबू पाया जा सकता है।